दिनांक 1.10.2018 को आयोजित 92वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का संबोधन

आयोग के सदस्य, सम्माननीय पूर्व अध्यक्ष और साथियों, सभी को संघ लोक सेवा आयोग के 92वें स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई।

2. सर्वप्रथम, मैं सभी सम्माननीय पूर्व अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति विशेष आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित होकर समारोह को गरिमा प्रदान की है। आप सभी ने आयोग की परंपराओं, परिपाटियों की नींव को सुदृढ़ किया और उन्हें कायम रखने के लिए अथाह परिश्रम किया। आपके इस अतुलनीय योगदान के कारण ही आयोग एक महत्वपूर्ण निकाय के रूप में उभरा है और अपने संवैधानिक लक्ष्य को पूरा करने की ओर अग्रसर है। आप सभी की दूरदर्शिता, विलक्षणता, कठोर परिश्रम और सत्यनिष्ठा के सर्वोत्कृष्ट सिद्धांतों का पालन करने की विशिष्टताओं से हमें लगातार उन्नति करने की प्रेरणा मिलती है और हम पूरे देश को आधुनिक और योग्यता आधारित सिविल सेवा प्रदान करने के अपने प्रमुख लक्ष्य को पूरा कर पा रहे हैं। आज इस अवसर पर मैं जिन उपलब्धियों का उल्लेख करूंगा उनमें से कई उपलब्धियां हमारे कुछ पूर्व साथियों द्वारा शुरू की गई पहल की वजह से हासिल हुई हैं और इनके लिए सचिवालय के कार्मिकों ने कड़ी मेहनत, लगन और निष्ठा से कार्य किया है।

3. मैं आयोग में तीन वर्ष से अधिक समय से हूँ और महसूस करता हूँ कि आयोग में काम करना और इस महत्वपूर्ण संस्था का हिस्सा बनना हम सभी के लिए सौभाग्य और गौरव की बात है। कुल मिलाकर मैं यह मानता हूँ कि इस संस्था की भव्यता और महानता इसलिए है कि समृद्ध और विभिन्न व्यावसायिक पृष्ठभूमियों से आए हमारे सम्माननीय सदस्यों ने अपने विवेक और बुद्धिमता से इसे सुदृढ बनाया। उन्होंने अपनी कुशाग्र बुद्धि और ज्ञान से एक समृद्ध परंपरा सृजित की और ऐसी सुदृढ़ प्रथाओं की नींव रखी जो समय की कसौटी और आम जनता की निगाह में खरी उतरी है। यह संस्था मजबूत और दोषरहित है क्योंकि हम सभी एक दूसरे के विजन, सोच और धारणाओं को पूरा सम्मान देते हैं, साथ ही अपने विचारों का खुले मन से आदान-प्रदान भी करते हैं। निरंतर बातचीत से हम यह अनुभव कर

पाते हैं कि हमारी अपनी व्यक्तिगत राय बहुत अच्छी हो सकती है लेकिन सर्वश्रेष्ठ निर्णय तो सर्वसम्मति से और खुली चर्चा के बाद ही निकलता है। हम इस परंपरा को संरक्षित रखने के लिए प्रयासरत हैं।

4. शुरुआत में, मैं आयोग के अपने कार्यों की बात करना चाहूंगा, जैसे परीक्षाएं आयोजित करना, भर्तियां और नियुक्तियां करना, विभागीय पदोन्नति समितियों की बैठकें करना तथा अनुशासनिक मामलों में परामर्श देना। परीक्षाओं का आयोजन बहुत ही संवेदनशील और निश्चित तौर पर काफी दबाव वाला कार्य है। परीक्षा की तारीख तय होने से लेकर प्रश्नपत्र तैयार और प्रिंट करना, आयोजन स्थल तक दस्तावेजों को पहुंचाने तथा परीक्षाएं आयोजित करने की व्यवस्था करना, मूल्यांकन प्रक्रिया और परिणामों की घोषणा, सभी चुनौतीपूर्ण कार्य हैं, लेकिन सभी कार्य इस तरह किए जाते हैं कि गलती की कोई संभावना न रहे। हम ये सभी कार्य वर्षों से कर रहे हैं और इस तरह करते हैं कि किसी भी स्तर पर कोई चूक न हो। **हमारे सभी अधिकारी और कर्मचारी इस जिम्मेदारी को बखूबी पूरा कर रहे हैं। हम अपने उम्मीदवारों का तनाव कम करने की कोशिश करते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि वे भी अपने स्वर्णिम भविष्य की तलाश में प्रयासरत हैं और दबाव में रहते हैं।** कुछ समय से हमने परीक्षा संबंधी संपर्क और कई कार्रवाईयों को ऑनलाइन कर दिया है। हम परीक्षा में लिखित माध्यम ('पेन एंड पेपर मोड') को कंप्यूटर आधारित माध्यम में परिवर्तित करने के लिए भी कार्य कर रहे हैं। **परीक्षा की प्रक्रिया को उम्मीदवारों के लिए अधिक सुविधाजनक (कंप्यूटर-फ्रेंडली) बनाने** के अतिरिक्त, नई प्रणाली में प्रत्येक परीक्षा के समय चक्र में भी कमी आएगी। हम परीक्षाओं के लिए **बेहतर परीक्षा-केन्द्रों की तलाश कर रहे हैं और इस बात पर विचार कर रहे हैं कि क्या ऐसी प्रणाली की शुरुआत की जा सकती है जिसके द्वारा परीक्षा के प्रति कम गंभीर और कम तैयारी करने वाले उम्मीदवारों को अपने आवेदन समय पर वापस लेने के लिए बढ़ावा दिया जा सके ताकि परीक्षाओं के आयोजन के लिए जुटाए जाने वाले आवश्यक संसाधनों में कटौती की जा सके।** उदाहरण के लिए, सिविल सेवा परीक्षा के लिए आवेदन करने वाले 10 लाख से भी अधिक उम्मीदवारों में से लगभग 50% उम्मीदवार ही वास्तव में प्रारंभिक परीक्षा में बैठते हैं। आयोग को परीक्षा-केन्द्र बुक कराना, प्रश्न–पत्र प्रिंट करवाना, निरीक्षकों को पारिश्रमिक देना होता है और सभी 10 लाख आवेदकों के लिए परीक्षा सामग्री

भेजनी पड़ती है जिसकी वजह से 50% ऊर्जा और संसाधनों की बर्बादी होती है। हमारा मानना है कि यदि हमें वास्तविक और गंभीर उम्मीदवारों के लिए कार्य करने को मिले, तो हम उन्हें बेहतर सुविधाएं दे कर अपनी परीक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं। इंजीनियरी सेवा परीक्षा, 2019 से एक नई शुरूआत की जा रही है और अन्य परीक्षाओं के लिए भी यह व्यवस्था लागू की जाएगी। अभी इस पर कार्य चल रहा है।

5. **रोजगार के बेहतर अवसर की युवाओं की आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए, आयोग अब कुछ परीक्षाओं में अनुशंसित नहीं किए गए उम्मीदवारों के अंकों और रैंक को अपनी वेबसाइट पर प्रदर्शित कर उन्हें श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के "नेशनल करियर सर्विसेज" पोर्टल के साथ लिंक कर रहा है।** केन्द्रीय मंत्रालयों और संगठनों द्वारा सुविधाजनक रूप से इस व्यवस्था का लाभ लिया जा सकता है जिसके जरिए सिविल सेवाओं, इंजीनियरी सेवाओं या सम्मिलित चिकित्सा सेवा परीक्षाओं में कड़ी स्क्रीनिंग प्रक्रिया क्लीयर करने वाले वे उम्मीदवार, जो रिक्तियां उपलब्ध नहीं होने के कारण योग्यता सूची मे नहीं आ सके, अब उसी डाटा बेस के आधार पर अन्य सरकारी, सार्वजनिक क्षेत्र या निजी क्षेत्र की नौकरियां मिलने की उम्मीद कर सकते हैं। इस व्यवस्था से प्रवेश स्तर की एक जैसी अर्हताओं वाले पदों के लिए विभिन्न संगठनों द्वारा बहुविध और पृथक परीक्षाएं आयोजित करना आवश्यक नहीं होगा। इससे **नौकरी के इच्छुक युवाओं का तनाव कम होगा** और साथ ही विभिन्न निकायों द्वारा भर्ती में लगने वाले समय में कमी आएगी। आवेदकों की और मदद करने के लिए, एक प्रश्न आधारित अंक सूचना प्रणाली प्रारंभ की गई है जिसके अंतर्गत एक इंटरेक्टिव पोर्टल के माध्यम से साक्षात्कार लिए गए सभी उम्मीदवारों को प्रश्न के अंक प्रदान किए जाते हैं।

6. प्रौद्योगिकी का विवेकपूर्वक प्रयोग करने के अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए, आयोग परिसर में ऑप्टिकल फाइबर केबल्स (ओएफसी) लगाई गईं हैं। भूतपूर्व माननीय अध्यक्षों और सदस्यों के लिए एकल और बहुविध परीक्षाओं से संबंधित एक ऑनलाइन प्रश्न-पत्र अभ्यावेदन पोर्टल, प्रश्न आधारित अंक सूचना प्रणाली, बिल मानीटरिंग प्रणाली, एकल खिड़की प्रणाली (सिंगल विंडो सिस्टम) के अंतर्गत परीक्षा-केन्द्र प्रबंधन प्रणाली और ई-नियुक्ति व्यवस्था विकसित कर इसका प्रयोग किया जा रहा है। बढ़ते ऑनलाइन आवेदनों

को देखते हुए ऑनलाइन सर्वरों को अपग्रेड कर दिया गया है। आयोग ने अपनी सभी वार्षिक रिपोर्टों और अन्य महत्वपूर्ण फाइलों को डिजिटल कर दिया है और ज्यादा से ज्यादा जगह खाली रखने के लिए प्रलेखों को भी डिजिटल रूप दिया जा रहा है जिससे कि अधिक साफ-सुथरा और कार्य के अनुकूल वातावरण उपलब्ध किया जा सके। संघ लोक सेवा आयोग के स्टाफ के सदस्यों और अधिकारियों की सेवा-पुस्तिकाओं को स्कैन करके ई-सर्विस बुक पोर्टल पर अपलोड कर दिया गया है। पेंशन मामलों को "भविष्य" वेब पोर्टल के माध्यम से व्यवस्थित किया जा रहा है और ऑनलाइन कार्य-निष्पादन मूल्यांकन प्रणाली (एसपीएआरआरओडब्ल्यू) को कार्यान्वित कर दिया गया है।

7. आयोग के समृद्ध इतिहास और विरासत को संरक्षित करने के लिए, जैसा कि आप जानते ही हैं, हमने परीक्षा भवन के भूतल पर एक संग्रहालय बनाया है। महत्वपूर्ण प्रलेखों और अभिलेखबद्ध की जाने वाली अन्य सामग्री के संग्रह की सभी ने सराहना की है और संग्रहालय में आगंतुकों की संख्या में बढ़ रही है। संग्रहालय के बारे में अधिकाधिक लोगों को जानकारी देने के लिए, अब संघ लोक सेवा आयोग की वेबसाइट पर इस संग्रहालय का वर्चुअल टूर भी दिया गया है जहां आप संग्रहालय के माध्यम से नेविगेट कर सकते हैं और वहां प्रदर्शित विभिन्न सामग्रियों को देख सकते हैं। यह महसूस करते हुए कि जिज्ञासु आगंतुक प्रदर्शित सामग्री को वास्तविक रूप में पढ़ना चाहेंगे, हमने राष्ट्रीय अभिलेखागार की विशिष्ट मदद से लगभग सभी दस्तावेजों को डिजिटलाइज़ कर दिया है। डिजिटल किए गए इन दस्तावेजों को संघ लोक सेवा आयोग की वेबसाइट पर भी प्रदर्शित किया गया है और ये शीघ्र ही 360° वर्चुअल टूर में प्रदर्शित सामग्रियों से संबद्ध हाइपरलिंक्ड फाइलों के रूप में उपलब्ध होंगे। डिजिटल किए गए इन दस्तावेजों को संग्रहालय में उपलब्ध एलईडी डिस्पले पर प्रदर्शित करने की भी हमारी योजना है ताकि आगंतुक संवेदनशील और पुराने कागजों को हाथ लगाए बिना ही संपूर्ण दस्तावेज को पृष्ठ-दर-पृष्ठ पढ़ सकें।

8. आयोग की अवसंरचना में भी काफी सुधार हुआ है और आज हमारे सभी भवन दिव्यांग आगंतुकों के लिए सुगम्य भारत अभियान के मानदंडों के अनुरूप हैं। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) से मिले सहयोग के लिए भी आभार प्रकट करना जरूरी है। कार्यालय के लिए अधिक स्थान के साथ-साथ परीक्षाएं आयोजित करने और सलाहकारों के लिए अतिरिक्त जगह रखने की हमारी आवश्यकता को देखते हुए, हम संघ लोक सेवा

आयोग के लिए अत्याधुनिक परीक्षा सुविधाएं और सलाहकारों के लिए नए सुइट प्रदान करने के प्रस्ताव तैयार कर रहे हैं।

9. उपर्युक्त तरक्की बेशक अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, परंतु हमें जिस बात पर गर्व है – और जिसकी वजह से अत्यधिक जिम्मेदारी का एहसास भी होता है – वह है आयोग की प्रतिष्ठित छवि को बनाए रखना। राज्यों के पुलिस महानिदेशकों की नियुक्ति के मामले के संबंध में प्रकाश सिंह और अन्य बनाम भारत संघ मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा हाल ही में दिया गया निर्णय इसका स्पष्ट उदाहरण है जिसमें राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में पुलिस बल के प्रमुखों के पद के लिए अधिकारियों के पैनल तैयार करने का मामला संघ लोक सेवा आयोग को सौंप दिया गया है। दिनांक 5 जुलाई, 2018 को जब मैं माननीय राष्ट्रपति जी से मिला तो उन्होंने कहा कि यह निर्णय संघ लोक सेवा आयोग द्वारा पालन की जा रही कार्यविधियों की निष्पक्षता में राष्ट्र द्वारा व्यक्त किए गए सर्वाधिक विश्वास का संकेत है। जैसा कि आप सभी जानते हैं, मीडिया द्वारा सेवाओं में पार्श्व-प्रवेश के सरकार के प्रस्ताव से संबंधित एक अन्य सामयिक मुद्दे के विषय में विभिन्न विचार व्यक्त किए गए हैं। इस प्रस्ताव की प्रशंसा के साथ-साथ कुछ ने इसकी आलोचना भी की है। लेकिन इस जन संवाद में एक बात स्पष्ट दिखाई देती है कि सभी ने न्यायपूर्ण, भेदभाव रहित और निष्पक्ष चयन प्रक्रिया की व्यवस्था करने की संघ लोक सेवा आयोग की भूमिका की सराहना की है जो समय की कसौटी पर खरा उतरा है।

10. अत:, क्या हमारी प्रणाली सर्वश्रेष्ठ है?

मैं कहूंगा “नहीं”।

हम जिन चुनौतियों से लड़ रहे हैं, वे हैं उम्मीदवारों द्वारा अनुचित साधनों का प्रयोग करने का प्रयास करना, परीक्षा केन्द्रों पर बुनियादी ढांचे की खराब गुणवत्ता, अन्वीक्षण की खराब गुणवत्ता और लॉजिस्टिक्स संबंधी कई मुद्दे। विभिन्न स्रोतों/संपर्कों के माध्यम से कमियों को दूर करने के प्रयास के साथ-साथ हम अन्य देशों के लोक सेवा आयोगों के साथ भी बातचीत

कर रहे हैं ताकि चुनौतियों का सामना करने के लिए उनकी सर्वश्रेष्ठ कार्य-प्रणालियों की जानकारी प्राप्त कर सकें। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी पहुंच अन्य देशों के साथ अपने ज्ञान को साझा करने के अतिरिक्त यह सीखने की भी है कि विभिन्न देश प्रौद्योगिकी का उपयोग किस प्रकार कर रहे हैं और प्रभावी भर्ती प्रणालियों के परिचालन के लिए अन्य किन तरीकों को अपनाना है। हमने अब मंगोलिया, भूटान और मॉरीशस के लोक सेवा आयोगों के साथ सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। पिछले कुछ हफ्तों में मलेशिया और अफगानिस्तान के प्रतिनिधिमंडलों ने आयोग का दौरा किया है और आगंतुकों ने संघ लोक सेवा आयोग के साथ अपने संबंधों में रूचि दिखाई। अगले सप्ताह मलेशिया के माननीय मानव संसाधन मंत्री भी विचारों के आदान-प्रदान और आपसी बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए आयोग का दौरा कर रहे हैं। फ्रांस की संगत लोक सेवा संस्थाओं की पद्धतियों को सीखने के लिए हमारे अधिकारी शीघ्र ही पेरिस का दौरा करेंगे। हम विदेश मंत्रालय के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र, कनाडा और आस्ट्रेलिया के साथ भी वार्ता कर रहे हैं और आशा है कि इन देशों की लोक सेवा संस्थाओं की आधुनिक पद्धतियों को समझने के लिए हमें सहयोग प्राप्त करना होगा। हम चुनिंदा सूचना प्रौद्योगिकी फर्मों और कारपोरेट जगत में कार्यरत अग्रणी मानव संसाधन एजेंसियों के साथ भी विचार-विमर्श कर रहे हैं कि क्या हम उनके कुछ तौर-तरीकों को हमारी अपनी कार्यविधियों में शामिल कर सकते हैं जिससे कि उम्मीदवारों के लिए अधिक सुविधाजनक, कार्यक्षम और मजबूत परीक्षा एवं चयन प्रणाली तैयार की जा सके। हम सर्वश्रेष्ठ विचारों का सदैव स्वागत करते हैं।

11. अंत में, मैं प्रतिष्ठित धौलपुर हाउस – गोल बिल्डिंग के मुख्य प्रवेश द्वार के बारे में आपसे बात करना चाहूंगा । अब मुख्य प्रवेश हॉल में भारत के सुप्रसिद्ध मूर्तिकारों में से एक, श्री राम सुतार द्वारा बनाई गई महात्मा गांधी की कांस्य प्रतिमा स्थापित की गई है जो **सिविल सेवाओं के चरित्र** को दर्शाती है। **उम्मीदवारों को यह स्पष्ट संदेश मिलता है : कि जब वे जन सेवा के लिए सिविल सेवा में आते हैं तो यह आशा की जाती है कि वे समाज के शोषित वर्गों के हित में निर्णय लेंगे। यह मूर्ति विभिन्न बैठकों में उपस्थित होने वाले वरिष्ठ नौकरशाहों को उन्हीं सिद्धांतों की याद दिलाती हैं और साथ ही यह भी कि सुशासन में अहंकार और कपट के लिए कोई स्थान नहीं है तथा संघ लोक सेवा आयोग अपने सभी आगंतुकों से यह आशा करता है कि वे हमेशा विनम्रता और देश की सेवा करने की भावना को अंगीकार करें।**

12. कल 'गांधी जयंती' है और इस उपलक्ष्य में, मुझे, शांति और आत्मदर्शन के संबंध में राष्ट्रपिता का स्मरण हो रहा है। आज मैंने बहुत सारी बातें की है, परंतु महात्मा गांधी भी मेरी इस राय से सहमत होते कि कर्तव्य स्वयं से पहले आता है। मुझे मौन रहना और आत्ममंथन करना पसंद है परंतु ये सारी बातें बताकर मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया है।

13. अंत में, इस अवसर की शोभा बढ़ाने के लिए मैं आप सभी का पुन: धन्यवाद करता हूं।

जय हिंद